

सुखु वर्षा जा री

(२५)

धीरे से आजा री मोहन अखियनि में

निंदिया आजा री आजा ।

चुपके से नयनों की पलकों में

निंदिया आजा री आजा ॥

मेरे कन्हैया है कमलों से कोमल

उनकी तूं थकान मिटा जा री ॥१॥

छोटे छोटे पावों से गैया चराकर

सारा दिवस बन मांहि बिताकर

अब रजनी से सुखु वर्षा जा री ॥२॥

चन्दा की चान्दनी छटक रही है

ठण्डी समीर आइ झटक रही है

तू भी उन्हीं के संग आजा री ॥३॥

प्रेम पालने में लालन झुलाऊं

कर कमल से थपकि के अंग सहराऊ

रोम रोम रस छा जा री ॥४॥